KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
REGIONAL OFFICE AGRA

NEWSLETTER

on One Day Webinar
Under
EK BHARAT SHRESTHA BHARAT

एक भारत श्रेष्ठ भारत

A befitting platform for students to unveil their talents

Organising Team
Principal
&
Staff Members, KV Moradabad

Designed by:Arti Sharma Tgt A.E

OUR LEADER
SHRI C.S AZAD
DEPUTY COMMISSIONER
KVS RO AGRA

MENTOR
DR . M.L MISHRA
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO AGRA

MENTOR
SMT.INDIRA MUDGAL
ASSISTANT COMMISSIONER
KVS RO AGRA

GUIDANCE & SUPPORT
SH VIJESH KUMAR
PRINCIPAL
KV MORADABAD

Arunachal in Ek Bharat Shreshtha Bharat

Sh.Vijesh Kumar (Principal) KV Moradabad

भारत-अनेकता में एकता की शक्ति समेटे हुए एक राष्ट्र जो सिर्फ एक भौगोलिक देश नही बल्कि एक जीता जागता राष्ट्र पुरुष है। और इस राष्ट्र की पहचान होती है एक दर्शन के साथ, जिसमें यह विश्वास है कि हर दिल में ईश्वर का वास होता है,चाहे फिर वह अभिवादन हो या आस्था।

जहां संसार को चलायमान रखने वाले सूर्य की आराधना की जाती है। पंचतत्वों को जीवन का आधार मानने वाले हमारे इस देश मे जब उत्सव मनाये जाते हैं तो प्रकृति झूमने लगती है।

सर्वधर्म समभाव की भावना हमारे देश ने विश्व को दी और सौहार्द तथा भाईचारे की मिसाल प्रस्तुत की है। जहाँ मंदिर,मस्जिद, गुरुद्वारे किसी औढनी पर टाँके गए सितारे से जगमगाते रहते हैं ।

जहां की पौराणिक कथाएं देश को एक आस्था से जोड़ती हैं और जो ये विश्वास दिलाती हैं कि प्राकृतिक चक्र जीवन की गति को विस्तार देता है।

हमारे देश की मिट्टी की खुशबू जिसमें विभिन्न संस्कृति, जाति, भाषाएं और रंगों का समावेश है, जो मिलकर एक रंग,एक आदर्श और एक दर्शन के रूप में अपना अतुलनीय स्थान बनाता है। जहां अतिथि देवो भव की परंपरा सभी को आकर्षित करती है।

जहां प्रकृति हमारे अंदर ऊर्जा का समावेश करती है,चाहे वह सागर की गहराई नापने का जज्बा हो या चोटियों से ऊंचा उठने का संकल्प।जहां हर पल हम कुछ नया सीखने में लगे रहते हैं और अपनी कला,हुनर,जोश और आस्था से विश्व में श्रेष्ठ स्थान पर विराजते हैं।

हमारी सांस्कृतिक विरासतें और ऐतिहासिक धरोहरों पर हमें गर्व है। जहां हिमालय की बेटियां कल कल करती और आस्था की खुशबू को संग बहाती पूरे देश में धमनियों की तरह दौड़ती हैं और सागर में मिल देश के प्रेम को एक निश्चल रंग में मिला देती हैं।

भिन्न भिन्न प्रान्तों की भौगोलिक स्थितियां,परिवर्तित जलवायु, देखने वालों को एक प्राकृतिक झांकी सी प्रतीत होती है। अनेक धर्मों और संस्कृतियों के विभिन्न स्वरूपों के साथ साथ जैविक विविधता भी मनमोहक है,लगता है जैसे किसी चित्रकार ने अपनी सबसे उत्तम रचना प्रस्तुत की है।

जहां घाटों की आरती मस्जिदों की गूंज में मिलकर देश के आधार को मजबूत करती है और सबके दिलों में सारे रंगों को घोल कर तिरंगे में समाहित होती है। हमारी विरासतों से विश्व में अपना परचम लहराता है।

विविधताओं से भरे किन्तु एकता व राष्ट्रीयता के सूत्र में बंधे हर क्षेत्र व प्रांत के लोग जब साथ आते हैं तब निर्मित होता है 'एक भारत श्रेष्ठ भारत'

हमारे देश की विविधता में एकता को बढ़ावा देने और हमारे देश के लोगों के बीच पारंपरिक रूप से विद्यमान भावनात्मक बंधन के ताने को बनाए रखने और मजबूत करने के इस कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश का साथी राज्य है अरुणाचल प्रदेश।

तो आइये चलते हैं अतुलनीय भारत के अभिन्न अंग अरुणाचल प्रदेश की ओर।

अरुणाचल प्रदेश - दुनिया के सबसे शानदार, विविध, बहुभाषी आदिवासी लोगों,जंगलों, वनस्पतियों और जीवों की विविधता का अद्वितीय निवास स्थान, शानदार नदियों के साथ बिखरा हुआ है।

इसके घने जंगल, बर्फ से ढकी चोटियाँ,पहाड़ों और गर्जन वाली नदियों, झीलों व झरनों का अनुपम सौंदर्य मुग्ध करने वाला है। चाहे वह ऊंचाई पर स्थित तवांग शहर हो या हिमालय की तलहटी में बसी हुई देवदार के पहाड़ों, से घिरी सुरम्य जीरो घाटी;

दिबांग नदी के किनारे बसा शीतलता प्रदान करता रोइंग शहर हो या सेब के बागों से भरा बोमडिला टाउन; लोहित हो या ईटानगर अरुणाचल का प्राकृतिक सौंदर्य अप्रतिम है।

अरुणाचल प्रदेश वास्तव में उप-जनजातियों सहित 26 प्रमुख जनजातियों के साथ एक संस्कृति स्वर्ग है। हर जनजाति की परंपराओं और रीति-रिवाजों का अपना अनूठा समूह है।अपनी लोक संस्कृति में रचा बसा यहाँ का समाज अपनी अलग ही कहानी बयां करता है।जिसमें मेहनत और विविधता में एकता की झलक साफ़ दिखाई देती है.यहां आस्था,प्रेम और विश्वास का संगम झलकता है। प्रकृति जहाँ धरती को अनेक रंगों से सजाती है वहीँ जीवन को खुशनुमा और मज़बूत बनाती है.यहाँ परिस्थिति पर एकता प्रदर्शित होती है चाहे वह नृत्य हो या हो त्यौहार. आस्था और प्रेम में रचा बसा यह प्रदेश जिसमे ख़ुशी प्रेम और उल्लास की खुशबू चारों ओर बिखरी हुई है। यह है आपका अपना प्रदेश अरुणाचल प्रदेश ।

विजेश कुमार
प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय
मुरादाबाद

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Historical Background of Arunachal Pradesh

Mr.Hemant Kumar (PGT History)

"अरुणाचल प्रदेश – ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि"

अरुणाचल प्रदेश प्रकृति की गोद में पल्लवित भारत का एक उत्तर- पूर्वी राज्य है| इसे उगते सूर्य की भूमि भी कहा जाता है , क्योंकि अरुणाचल का अर्थ हिंदी में उगते सूर्य का पर्वत होता है |

अरुणाचल प्रदेश का प्रारंभिक इतिहास लिखित रूप में बमुश्किल उपलब्ध है किन्तु इतिहास लेखन की एक अन्य विधा मौखिक परम्परा के रूप में कुछ साहित्यिक व ऐतिहासिक स्रोत इस पर्वतीय राज्य के बारे में अवश्य मिलते हैं | बात साहित्य की करें तो कल्कि पुराण , रामायण व महाभारत जैसे महाकाव्यों में भी अरुणाचल प्रदेश का उल्लेख मिलता है | लोहित जिले में स्थित परशुराम कुण्ड स्थल इस बात का सूचक है कि भगवान परशुराम जी ने यहाँ पर रहकर अपने पापों का प्रायश्चित किया था , तो वहीं ऋषि व्यास जी ने अरुणाचल की तपोभूमि पर रहकर साधना की थी जिसे पुराणों में प्रभु पर्वत कहा गया है | इस प्रदेश के एक खूबसूरत जिले लोअर दिबांग वैली के मुख्यालय रोइंग शहर के उत्तर में फैली पहाड़ियों पर स्थित दो गांवों के पास बिखरे ईंटों की संरचना के अवशेष भगवान कृष्ण की पत्नी रुक्मणि के महल के उदाहरण है |

ऐतिहासिक साक्ष्यों की बात करें तो इस राज्य का उत्तर – पश्चिमी भाग मोन्युल के मोपाया राज्य के अंतर्गत आता था तथा बाकी बचा भाग विशेषकर निचली पहाड़ियां और मैदानी भाग असम के चुटिया राज्य में शामिल था | अरुणाचल प्रदेश का आधुनिक इतिहास 24 फरवरी 1826 ईस्वी को यांदबू संधि होने के बाद असम में ब्रिटिश शासन लागू होने के बाद से प्राप्त होता है |

वर्ष 1947 में भारत को ब्रिटिश शासन से आजादी मिली तथा अरुणाचल प्रदेश को पूर्वोत्तर सीमावर्ती एजेंसी (NEFA) का हिस्सा बनाया गया , परन्तु 1965 ईस्वी तक यहाँ के प्रशासन की देखभाल भारत सरकार का विदेश मंत्रालय करता था | सन 1965 के बाद इसके सामरिक महत्त्व के कारण अरुणाचल प्रदेश गृह मंत्रालय के अंतर्गत आ गया था |

सन 1972 इस राज्य के लिए विशेष महत्त्व रखता है क्योंकि इसी वर्ष अरुणाचल प्रदेश को केंद्र शासित राज्य का दर्जा मिल गया | अंततः 20 फरवरी 1987 को अरुणाचल प्रदेश एक स्वतंत्र राज्य के तौर पर भारतीय संघ का 24th राज्य बन गया और तब से लेकर आज तक यह प्रदेश नित नई ऊचाईयों को छूते हुए विकास के पथ पर अग्रसर है | सन 1917 में धौला- सादिया पुल (भूपेन हजारिका सेतु) बन जाने के बाद अरुणाचल प्रदेश में व्यापार और पर्यटन की असीम संभावनाएं खुल गयी हैं |

अरुणाचल प्रदेश में पूर्वोत्तर के सभी राज्यों से ज्यादा हिन्दी भाषा का प्रयोग बोलने में किया जाता है | यहाँ के स्कूल- कालेजों,अस्पतालों एवं बाजारों में आम बोलचाल की भाषा हिंदी ही है | हिन्दी गानों, फिल्मों, टेलीविजन- धारावाहिकों को भी यहाँ पर खूब देखा – सुना जाता है | देश-प्रेम की भावना से सराबोर अरुणाचल प्रदेश हमारे देश का एक खूबसूरत राज्य है |

धन्यवाद |

- हेमन्त कुमार

स्नाकोत्तरशिक्षक-इतिहास
के.वि.क्र.1, ए.एफ.एस.
आगरा |

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Confluence of Tribes

Mrs Anju Bala (PGT Economics)

Good Morning Everyone

Friends, the culture of Arunachal Pradesh is truly varied in a sense that this state has 26 major tribes including the sub-tribes and every tribe has its own unique set of traditions and customs.

The major tribes of Arunchal Pradesh are:

1.Adi Tribe:Adi tribe is one of the most populous group of indigenous people in state of Arunachal Pradesh. They are well organised, laborious, hardworking and democratic by nature. Adi women are well known for their extremely good weaving skills. Their villages are in the mountain laps.

2.Aka and Miji: The Aka tribe shares strong cultural affinities with the Miji and inter marriage with Miji is prevalent among them. Handicrafts, basket weaving and wood carving are the principal arts of the Aka tribe. They inhabit the districts of West and East Kameng, and they speak Sajalong language. Their total population is 37000 approximately and are found in the lower parts of sub Himalayan hills bordering Assam.

3.Apatani Tribe: Apatani is a tribal group of people living in Ziro valley in the lower Subansiri district of Arunachal Pradesh state. They speak a local language called Tani and worship the Sun and the Moon. They have extensive knowledge of herbal medicines to cure most of the ailments.

4.Beguns:Beguns is one of the earliest recognised scheduled tribe of India. They have their own folk songs, dances, music and rituals. This tribe is also known as Khowa tribe.They are primarily the inhabitants of Tenga valley, and they speak Khobwa language. In this “Kho” means fire and “Bwa” means water.

5.Galo:Galo tribe is a central eastern Himalayan tribe and they are the descendants of Abotani origin. They speak Tani language and have a distinct culture.Galo tribe celebrates a number of festivals throughout the year and one such important festival is “Mopin” which means warding of the evil spirits which brings bad- luck to the community.

6.Khamti Tribe:Khamti tribe is a branch of Tai race found in Bihpuria and Narayanpur areas of North Lakhimpur and the people of this tribe follow Buddhism.The basic tribe of Khamti tribe is agriculture. Women share equal position in society as men and the women of this tribe are very beautiful and expert cooks and good weavers also.

7.Mishmi Tribe: The Mishmi tribe is an ethnic group and it comprises mainly three tribes which are Idu Mishmi, Dijaro and Mijo Mishmi. They are identified by their typical hair style, costumes and artistic patterns. They are good in agriculture and trade. The men are also expert in craft and women are good weavers.

8.Monpa Tribe: They are inhabitants of high altitude of Twang district and mountain passes of Bombila. In Monpa society, man is the head of the family and takes all the decisions and in his absence the wife takes all the responsibility of the family.The Monpa is a gentle and hospitable tribe. Their main festivals are Losar which is the Tibetan New Year and Choskar is the unique harvest festival of this community.

9.Noctes Tribe: Noctes is an ethnic naga tribe and is mainly found in the Patkai hills of Tiral district of Arunachal Pradesh. Chalo and Loku are the most important festivals of Noctis tribe which are held in the month of November. The festival involves entertainment, slaughter of animals and praying of their indigenous gods.

10.Nyishi Tribe: This tribe is also spelled as Nishi and inhabits the major parts of lower Subansari district. This is a hunter warrior tribe and they are believed to be the descendants of Abotani.The main festival celebrated by them is Nyokum which means inviting all the Gods and Goddesses of the Universe.

11.Sherduken Tribe: It is an ethnic group in the west Kameng of Arunachal Pradesh. Khiksaba is their main festival which is celebrated by them to appease the forest deities and other mountain spirits. Rep-Lapchang is the harvest festival which is very popular in the community.

12.Singpho Tribe: This tribe is in Lohit and Changlang districts of Arunachal Pradesh. They are the followers of Buddhism.The Men are farmers and Black smith by occupation and the women are very good weavers. The Singpho are the same people as those called Kachin in Burma and Jingpo in China.

13.Tagin Tribe: This is also one of the major tribes of Arunachal Pradesh and they are the residents of Sunansiri district. They are known for their warm hospitality and are considered very friendly and pure hearted. Agriculture is their main occupation. The most important festival of Tagin Tribe is called Sidonyi which is a veneration of Earth and Sun.

14.Tangsa Tribe: It is naga tribe of Changland district of Arunachal Pradesh. They keep long hair in both the sexes. The men traditionally wear long, and narrow piece of cloth called Lamsan and the women wrap a piece of cloth around the chest and a similar piece of cloth around the waist.

15.Wancho Tribe: The Wancho are the indigenous people and inhabits the Patkai hills of longding district. Tattooing plays a major role among the Wancho tribe.The man is tattooed on his four limbs and his entire face and the women adorn themselves with the neclaces and bangles.During the fetivitivals the villagers exchange bamboos sticks filled with rice as a mark of greetings.

16.Yobin tribe: Lisu people in India are known as Yobin.They rear cows, buffaloes, chicken and pigs for food. They observe several festivals mostly Christians such as Good Friday, Harvest and New Year etc.Yobin tribe reside in Vijay nagar town of Changlang district in Arunachal Pradesh and has been recently accorded Scheduled Tribe status by Government of India.

Mrs. Anju Bala,
PGT Economics,
KV AFS No 1Hindann

Geographical Overview of Arunachal Pradesh

Dr. Abbal Singh (PGT Geography)

GEOGRAPHICAL OVERVIEW OF ARUNACHAL PRADESH

Arunachal Pradesh is called an orchid state of India lies north-east India. The state is the largest of seven sister states, having an area of 83743 sq. km. the state shares an international borders, 160 km. long with Bhutan in the west while of 1030 km. long border separates the state from china in the north. A 440km. long border exist between Arunachal Pradesh and Myanmar in the east it borders the state of Assam in the south and Nagaland in the east and south-east. Arunachal Pradesh falls on the outer Himalayas and Patkai hills. It was the part of NEFA in the 1951, after that it became the union territory in 1971 and at last it became the 24th state of India on 20th feb, 1987.

Arunachal Pradesh is a hilly state situated in the foothills of Himalayas physiographic it can be divided into 5 natural regions- 1- Kameng Valley, 2- Subansiri Valley, 3- Siang Valley, 4- Lohit Valley, 5- Tirap Valley. There are so many rivers and streams passing through Arunachal Pradesh. They originate from Himalayas and Arakan mountain range and became the tributaries of river Brahmaputra. The main rivers are dibang, kamala, subansiri, lohit, dehang, siang and tarap etc. river siang is the main river of Arunachal Pradesh it is called Tsangpo in Tibet. When siang joins with lohit and dibang at Assam it became Brahmaputra, the largest river of India in the water capacity.

Being hilly state Arunachal Pradesh enjoys sub-tropical to alpine type climate. The maximum temperature in summer is 40°C, during monsoon season it remains 22°C to 33°C and in winter it remains 15°C to 21°C the annual rainfall of Arunachal Pradesh is about 300cm with a variability of 80cm to 450cm. Arunachal Pradesh witness snowfall during winter in the higher regions. It enjoys sub-tropical to tundra type vegetation. Arunachal Pradesh is rich in plant and wildlife there are so many belts of natural vegetation from semi evergreen to temperate, coniferous and alpine. There are 5000 types of plant species and 500 types of birds. The biodiversity of Arunachal Pradesh is beyond compare.

DR.ABBAL SINGH
PGT GEOGRAPHY
KV. NO.1 AFS AGRA.

Biodiversity of Arunachal Pradesh

Dr.Narendra Kumar (PGT Economics)

जैव विविधताओं का प्रदेश- अरुणाचल प्रदेश

सभी को नमस्कार

आज हम एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत आयोजित बेबनार मे जैव विविधताओं का प्रदेश- अरुणाचल प्रदेश के सन्दर्भ में जानेंगे |

खिलखिलाते फूल, बर्फ की सफेद चादर से ढंकी पहाड़ों की चमचमाती चोटी, खूबसूरत वादियां, जंगल के पत्तों की सरगोशियां, तंग जगहों से पानी का घुमावदार बहाव, बौद्ध साधुओं के भजन की पावन ध्वनि और उनका अतिथि- सत्कार, तो यकीन जानिए, आप अरुणाचल प्रदेश में हैं।

अरुणाचल प्रदेश भारतीय संघ का 24 वां राज्य है, जो पश्चिम में भूटान से, पूर्व में म्यानमार से, उत्तर तथा पूर्वोत्तर में चीन से और दक्षिण में असम के मैदानों से घिरा है। भौगोलिक रूप से यह पूर्वी हिमालयी क्षेत्र में स्थित है, जो हिमालयी क्षेत्र का सबसे धनी जीव विज्ञान प्रांत है।

कुल भौगोलिक क्षेत्र 83,473 वर्ग किलोमीटर है, जिसमे 67,410 वर्ग किलोमीटर वनो से आच्छादित है| जो कि कुल भूमि का लगभग 80.43% है |

पूरे क्षेत्र में एक जटिल पहाड़ी प्रणाली है, जिसकी तलहटी में 50 मीटर से अधिक ऊँचाई होती है और धीरे-धीरे लगभग 7000 मीटर तक बढती गई है |

स्थलाकृतिक और जलवायु परिस्थितियों की यह विविधता असंख्य पौधों और पशु-पक्षियों के लिए आवास हैं |

प्रकृति काफी हद तक दयालु रही है और उसने विविध वनों और शानदार वन्य जीवन के साथ अरुणाचल प्रदेश जैसे खुबसूरत राज्य को संपन्न किया है।

इन जंगलों में होने वाले वनस्पतियों और जीवों में 5000 से अधिक पौधों, लगभग 85 स्थलीय स्तनधारियों,
500 से अधिक पक्षियों और बड़ी संख्या में तितलियों,कीटों और सरीसृपों के साथ जैविक विविधता का एक विविध रुप यहाँ देखने को मिलता है|

जब हम अरुणाचल प्रदेश की विविधताओं की बात करते है तो
इटानगर' किलो का शहर
'पासीघाट' वॉटर स्पोर्ट
विश्व धरोहर स्थल 'जीरो'
तवांग की 'रहस्यमयी और जादुई खूबसूरती' इस भूमि की सुंदरता को एक अलग ही छवि प्रदान करते है |

अदभुत जैव विविधता को समेटे हुए प्राकृतिक पेड़-पौधों की उष्ण कटिबंधीय वनस्पति से लेकर उत्तर ध्रुवीय पहाडी वन्स्पतियों की एक विस्तृत श्रृंखला यहाँ पाई जाती है| अरुणाचल प्रदेश,भारत की मिट्टी में सूर्य की पहली किरणों से छुआ एक ऐसा प्रदेश है,जो 'अत्यधिक उपजाऊ और विविध भूभाग' से भरा हुआ है।

इस भूमि को अब विश्व के एक जैव विविधता विरासत स्थल के रूप में देखा जा रहा है | अरुणाचल प्रदेश घने सदाबहार वनों तथा विभिन्न धाराओं, नदियों तथा घाटियों और कुल क्षेत्र के 60% से अधिक क्षेत्र में स्थित वनस्पति तथा जीवों की सैकड़ों-हजारों प्रजातियों से सम्पन्न है |

यहाँ पक्षियों की 500 से अधिक प्रजातियाँ की गणना की गई हैं, जिनमें से कई अत्यधिक खतरे में हैं:-
जैसे सफ़ेद पंखों वाली बतख, स्क्लेटर, मोनल बंगाल फ्लोरियन आदि।

अरुणाचल प्रदेश की समृद्ध जीव-जंतु विविधता में स्तनधारियों की 216 प्रजातियाँ,
सरीसृपों की 119 प्रजातियाँ, एम्फ़िबियन की 53 प्रजातियाँ,मीन की 218 प्रजातियाँ,
और पक्षियों की 770 प्रजातियाँ पाई जाती है |

विशाल आकार के पेड़, प्रचुर मात्रा में बेल तथा लताएँ और बेंत तथा बांस की बहुतायत अरुणाचल को सदाबहार बनाते हैं।

भारत में पाई जाने वाली ऑर्किड की लगभग ग्यारह हजार प्रजातियों में से 600 से अधिक अकेले अरुणाचल में पाई जाती हैं। कुछ ऑर्किड दुर्लभ हैं और इन्हें लुप्तप्राय श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है।

आर्किड के रंग-बिरंगे फूल की धारियों को देखकर ऐसा लगता है, जैसे किसी कलाकार ने पेंटिग की हो ।

यहाँ के वन्य जीवन में हाथी, बाघ, तेंदुआ, जंगली बिल्ली, सफ़ेद लंगूर, लाल पांडा, कस्तूरी और "मिथुन" जैसे जीव जंतु पाए जाते हैं।

डिबांग घाटी अपने आप में अदभुत जैव विविधता को समेटे हुए है। और डिबांग घाटी के इड्ड मिशमि समुदाय को भी पारम्परिक स्वामित्व के कारण वनों के प्रबंधन के अधिकार प्राप्त हैं।

यह एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ टाइगर (पेंथेरा टाइग्रिस), तेंदुआ, क्लाउडेड लेपर्ड (नियोफेलिस नेबुलोसा) और स्नो लेपर्ड नामक चार प्रमुख बिल्लियों की प्रजातियाँ पाई जाती है |

अरुणाचल प्रदेश का
राजकीय वृक्ष-होलोंग है
तो राजकीय पशु-मिथुन
राजकीय पक्षी-ग्रेट इंडियन हॉर्नबिल
तो राजकीय पुष्प- फॉक्स टेल आर्किड (द्रौपदी माला) है |

इस तरह हमलोगों ने यहाँ के जैव विविधताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की |एक खुबसूरत प्रदेश की अद्भुत प्राकृतिक सुन्दरता को हमने जानने का प्रयास किया |

(डा.नरेन्द्र कुमार)
स्नातकोत्तर शिक्षक(अर्थशास्त्र)
केन्द्रीय विद्यालय,मुरादाबाद

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Mesmerising Attires

Master Suryansh Kumar

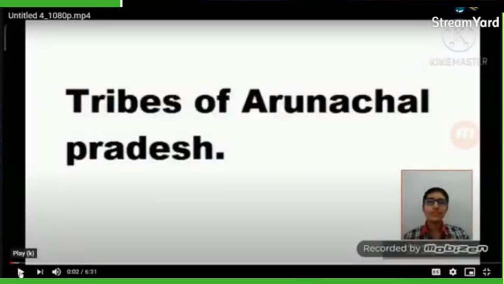

Tribal Clothing From Arunachal Pradesh

The state of Arunachal Pradesh is an exotic collection of socio-cultural life that blends many dressing styles.

Nyishi

The Nyishis feel proud to be covered by the animals, plants and Himalayan stones from head to toe as this represents their love for nature and their harmony with their surrounding!! Men in the Nyishi tribes wear a cane helmet surmounted with the beak of the great Indian hornbill called Byopa.

IDU MISHMI TRIBES

The Idus are expert craftsman. The Idu women, in particular, are very good weavers. Their great aesthetic sense is well reflected in the exquisite designs created on the clothes produced on handlooms. The Idu men are well apt in making beautiful items of bamboo and cane especially traditional hats. Their war coats are called Ana-tubu. The Mishmis display more celebratory patterns in their attires.

SINGPHO TRIBE

Elegant ethnic handlooms of the Singpho community are known for their striking designs coupled with application of many traditional organic materials for producing colours from naturally available materials like plants, seeds and barks of trees. The women wear a special dress adorned with silver pieces called as Kumphong Kolong". Another worth mentioning ethnic attire is a traditional turban called the fumbum worn by both men and women

DIGARU & MIJU TRIBES

Ankle length skirts with a little red embroidery round the edges. Thin silver forehead plates and large ear plugs are characteristic, and rich girls often wear numerous silver hoops round the neck.. Rare Mishmi parang or da or sword from the Digaro subgroup is constructed of a bone pommel, hand forged blade, wood open scabbard, held together with copper wire and a pigskin carrying strap.

MONPA TRIBE

Costumes of these people are endowed with attractive and vibrant colors and myriad patterns, characteristic of the tribe culture. The caps worn by the men have tassels and laces. The chemise worn around the waist by the women are also beautifully designed, bright colored and have motifs defining the tribe. Their caps are endowed with fascinating peacock feathers, tassels and beads. The trademark is the skull cap which is smeared with yak's hair.

ADI TRIBE

The clothes of both men as well as women are made out of deerskin, bearskin and cane skin. The men awear fascinating helmets carved out of deer and bear skins and canes with boar teeth. The Adis are required to wear jackets and woollen clothes so as to keep themselves warm.

NOCTE

The Nocte dress is very simple. The male dress consists of a long piece of loincloth tied around the waist and worn like a 'Tanguti' with the rings of cane belts. Bamboo slips and armlets made of ivory are worn on all four limbs as well. The female wears skirts hanging from their waist to the knees, covering the knees and a blouse.

GALO

The Galo's look elegant in their soothing white attire with beautiful bead necklaces in blue and green..

APATANI

The Apatani tribe is the most advanced in its weaving techniques. Using fibers from trees, goat and human hair, they create ceremonial coats, shawls, skirts, sashes, lungis (loin cloths) with various forms of embroidery.While men make a knot of their hair on top of their forehead with a brass rod used for creating the knot which is known as Piiding Khotu.. Women get a tattoo of blue stripes on the chin and wear cane blocks in their noses.

SHERDUKPEN

Women wear collarless and sleeveless dresses till knee length with jacket.

Men wear knee length costume .The look is complete only after a skull cap which has yak's hair decorated on it is worn on top of the head.

TAGIN

A skull- cap filled with Yak hair, called as the 'Gurdam', adds elegance to the overall attire.The attire is never usually complete without 'Mushaiks' or waistcoat .

WANCHO

This warrior tribe popular for head hunting is all for Tattooing .Silver rings and earrings embroidered with variously coloured beads are a popular fashion accessory in the region. People create beautiful cane hats with embellishments of beaks and feathers of birds.

TANGSA TRIBE

They wear a broad cylindrical piece of cloth called lungi that is green in colour. with the availability of yarn, the costume of the women include an artistically woven petticoat, which acts as the lower garment, and a linen blouse.

AKA & MIJI TRIBE: Unlike the majority of other tribes of Arunachal Pradesh, India; the Miji people wear silver ornaments, and glass/brass based necklaces.Indigenous cosmetics are made from pine resin and coal

'Simplicity is elegance' is a saying which the people of the state follow very religiously which is why they have a sense of preservation and love for their traditional costumes.

Suryansh Kumar
Student
Kendriya Vidyalaya Moradabad

Folk Tales of Arunachal Pradesh

Miss Deepti Pachouri

FOLK TALES

"Fiction is written with reality and reality is written with fiction. So goes the popular saying.

Before the splendid modern-day mind was formed, our cultures and civilizations were conceived in the wombs of "fiction, legend, or folklore.

And the awesome Arunachal has a rich folk culture.Its intriguing folk tales, are its inseparable part reflecting the beliefs, traditions and ancestral heritage of its people.

Beliefs about the creation of the universe,the advent of man,the discovery of fire,creation of animals etc. feature in their folktales.

So here is the first folktale about the creation of the world from the HRUSSOs

In the beginning, there was nothing except for two revolving golden eggs.

The eggs collided and hatched.

From one came the sky from the other earth.

They met in a cosmic embrace.

However the earth proved too large for the sky to hold.

So the sky requested the earth to become smaller.

As the earth shrank mountains and valleys emerged.

The earth and the sky met again and in their embrace sprang life.And that is how the world was created

The second folktale is about the Sun and the moon from the Singpho's

In the beginning there were nine Suns.

Naturally they made everything very hot and men, trees and animals became variously coloured.

When Mathum-Matta saw that men and animals were suffering terribly from the heat, he killed seven of the Suns.

He also tried to kill the Sun and Moon, but they hid behind the Himalaya Mountains.

Here the Sun made a golden boat and the Moon made a silver boat.

The Sun sits in his boat and 'goes round and round the Himalayas. When he comes to this side of the mountains, it is day and when he goes to the far side, it is night. It is his golden boat which makes the world so bright.

The Moon sits in his silver boat and goes round and round the mountains. But sometimes he is tired and sleeps, sometimes he stands up and sometimes he sits down. This is why at one time we see more of the Moon and at other times less.

Thus we find that these Tribal folktales usually have a message of wisdom for how to live life well. The message is about Mankind's interdependence on the natural and supernatural world.

Man who is but a transient part in the godly scheme.

Deepti Pachouri
Student
Kendriya vidyalaya Moradabad

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Culture & Traditions of Arunachal Pradesh

Dr. Amitabh Sharma (PGT Hindi)

अरुणाचल प्रदेश की संस्कृति एवं परंपराएं ।

भारत के उत्तर पूर्व राज्य में स्थित अरुणाचल प्रदेश प्रकृति का एक वरदान है ।अरुणाचल शब्द का अर्थ है --उगते सूर्य का पर्वत। यहां की भौगोलिक स्थिति के अनुसार यह उक्ति सही चरितार्थ होती है ।अनेक जातियों में विभक्त इस प्रदेश की छटा निराली है। यहां पाई जाने वाली प्रमुख जनजातियों मेंआपातानी, खोवा,तागिन,मिश्मी,मीजी,मेम्बा,मिसू,सुलुग,गालो आदि हैं। जिनकी संख्या कुल मिलाकर 23 है । प्रत्येक जनजाति समूह की भाषा, लिपि एवं संकेत चिन्ह अलग-अलग हैं, जो जनजाति समूह की पहचान को दर्शाते हैं ।

जनजाति समूह का मुख्य व्यवसाय कृषि है ।कृषि कार्य के दोनों झूम खेती और पानी खेती कृषि की तकनीक है। चावल,कोदो,मक्का आदि प्रमुख फसलें है ।इसके साथ व्यापारिक फसलों के रूप में संतरा, माल्टा ,सेव भी शामिल हो चुके ।

यह सर्व विदित है कि भारत के सभी जनजाति समूह हस्त कला में निपुण हैं ।अरुणाचल भी इससे अछूता नहीं,जिसमें कपड़ा बुनना, कशीदाकारी,रंगकारी,गोदना,आभूषण बनाना, प्रमुख कार्य हैं ।मेरा अनुभव कहता है कि पर्वतीय क्षेत्र में रहने वाली स्त्रियां वहां की आर्थिक प्रगति की रीड की हड्डी हड्डी है । अरुणाचल की स्त्रियां भी पारिवारिक एवं सामाजिक आर्थिक गतिविधियों में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करती हैं ।

धार्मिक पृष्ठभूमि के आधार पर अरुणाचल प्रदेश की संस्कृति को तीन भागों में बांट सकते हैं ।1-बौद्ध धर्मावलंबी, 2-प्रकृति पूजक ,3-अन्य धर्मावलंबी। इस प्रदेश की जनजातियों पर बौद्ध धर्म की महायान एवं हीनयान शाखा का विशेष प्रभाव है। प्रकृति की पूजा करने वाले सूर्य एवं चंद्रमा की पूजा करते हैं । अन्य मामलों में हिंदू ,सिख ,ईसाई ,जैन ,मुस्लिम सभी शामिल हैं। जनजाति में कबीले का सरदार का सभी आदर करते हैं ।कुछ जनजाति समूह में बहु विवाह प्रथा भी देखने को मिलती है ।मृत्यु के पश्चात शव का दाह संस्कार करना एवं समाधि देना दोनों ही रूप सामने आते हैं ।
यहां पर त्योहारों का संबंध फसल के आगमन के साथ जुड़ा हुआ है ।कुछ जनजाति समूह में त्यौहार साल भर चलते रहते हैं।
अगर देखा जाए तो इस जनजाति प्रदेश की छटा अनुपम है ।ऐतिहासिक खोजों से ज्ञात होता है कि जनजाति संस्कृति का ऐतिहासिक कोई लिखित प्रमाण सुगमता से उपलब्ध नहीं है ।लेकिन मौखिक साहित्य ,भग्नावशेष, जन क्षुत्रियों से इनकी प्रामाणिकता को जाना जा सकता है।
एक सर्वे के अनुसार यह प्रदेश एशिया का सबसे विविधता पूर्ण क्षेत्र है ।जिसमें 30 से लेकर 50 तक विभिन्न प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं ।जो तिब्बती भाषा परिवार से संबंध रखती है।
यह प्रकृति की गोद में बसा प्रदेश पर्यटन एवं विद्युत ऊर्जा की अनेक संभावना वाला प्रदेश है ।आइए प्रकृति प्रेमी जनजाति समूह के साथ इस प्रदेश के सांस्कृतिक विविधता का आनंद जीवन में एक बार अवश्य प्राप्त करें ।

धन्यवाद

डॉ अमिताभ शर्मा
स्नातकोत्तर अध्यापक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय मुरादाबाद

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Arunachal-A Tourist Paradise

Mrs Madhubala (PGT Commerce)

TOURISM PARADISE OF ARUNACHAL PRADESH

The eastern crest of India cocoons a mystical land of bliss- Arunachal Pradesh. This 'Land of Rising Sun' has many wonders and attractions for travellers. The wavering rivers, the snow clad mountains, the stubborn plains, exclusive flora and fauna, legendary cultural heritage trailing since ancient times, the habitat of wild savages, the thick woodlands, the historical heritages, the tribal terrains.... Among the thousands of species of orchids as many as 600 species of orchid are found in Arunachal Pradesh.

Department of Tourism, Government of Arunachal Pradesh has tremendous scope for development of various types of tourism activities, such as Cultural tourism, adventure tourism, Historical tourism, Wildlife tourism; Nature based tourism and Eco-tourism. A visitor's permit from the tourism department is required.

Ahh! Lot many to have a rendezvous with. Each of the attractions in Arunachal Pradesh is at par.

So let's take you all to the glamorous places of Arunachal Pradesh "The Paradise of Botanists"

Itanagar the capital of Arunachal Pradesh called as Mini India.

Ita Fort is one of the most important historical site. The name literally means "Fort of bricks". Centre for Buddhist Culture Gompa, located on top of a hill. Surrounded by lush green lawns and scenic view of the mountains. The architecture of the temple has heavy Tibetan influence. Jawaharlal Nehru State Museum, which exhibits textiles and handicrafts, also showcasing diverse aspects of tribal life of Arunachal Pradesh.

Twang: The Heavenly Sela Pass at a high altitude mountain with 4170m elevation connecting Indian Buddhist town of Tawang to Dirang and Guwahati. Summers at Sela Pass are not very cold but temperature in winter can dip down to -10 degree Celsius. Limited vegetation grows around the Sela lake which is used as a grazing site for yaks during the summer.The mighty and spectacular Nuranang Falls (also known as Jang falls and Bong Bong Falls) at Jang is some 100 metres high. There is a small hydel plant near the base that generates electricity for local use.Twang Monastery, World's second Largest Monastery, birthplace of 6th Dalai Lama is situated in the valley of Tawang River, filled with Buddhist wall paintings and art. The Giant Buddha Statue, located on a small hill can be seen from almost everywhere offering really good views.Tawang is especially colourful in February when the Monpas, the native tribe, celebrate the Losar Festival.

Dirang: Located in Kalachakra village is a 500 year old monastery.The beautiful Thubsung Dhargye Ling Monastery in Dirang , a centre for learning is well designed, painted in vivid colours.

Along: a valley extremely beautiful as far as scenic grandeur of this place is concerned. Must visit is Ramakrishna Ashram.

Anini: climate varies by elevation. Although remote, the town has basic infrastructure. Major attractions trekking and landscape view.

Pasighat: Arunachal's oldest town is the land of the mighty Siang and indigenous hanging bridges. Beautiful atmosphere and experience some mind-blowing views.

Bhalu kapong: Fish angling and river rafting are the principal tourist activities in Bhalukpung. Tourist attractions include the Pakhui Game Sanctuary and Tipi Orchidarium.

Zero: the land of Apatani tribes having picturesque destination with pine and bamboo groves, famous for Paddy cultivation and Tipi Orchid Research Centre

Bomdila: The Bomdila pass offers views of Kangto and Gorichen Peaks, the highest in the state. GRL Buddhist Monastery, Buddha Park, Guru Rinpoche statue are must-visit places.

Roeing: the last major township at the north-eastern frontier of India, geographically plain with a lot of land for farming and cultivation.

Beauty of Arunachal Pradesh 'The Land of Dawn' attracts every lover of nature.

THANK YOU.

Mrs. Madhu Bala
PGT Commerce
K V Moradabad

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Arunachal Pradesh - A Heritage Hub

Mrs Pooja Bisht (PGT English)

FRONT OF THE MONASTERY

ZIRO VALLEY

Arunachal Pradesh-A Heritage Hub

With UNESCO world heritage sites like Namdapha National Park and Thembang Dzong Fortified Village, Arunachal Pradesh is just the perfect heritage hub. Ruins, temples, wilderness areas, - the place has a special mention on India's heritage tourism map.. In the hearts of mountains, the magnificent Tawang monastery happens to be the second oldest in Asia, largest in India and second largest in the world. other mindful places to visit in Arunachal Pradesh will be Malinithan, which is known for temple ruins dating back to 10th & 14th century AD that are believed to be associated with Lord Krishna.The Apatani Cultural Landscape Surrounded by blue rolling hills, Ziro Valley showcases unique skill of rice-fish cultivation in the fields by the Apatanis

Besides, over a heritage tour to Arunachal Pradesh, Bhismaknagar that happens to be the oldest archaeological and mythological site dating back to 12th century A.D is a must visit too. There are a couple of other heritage attractions that Arunachal Pradesh consist of like World War II Cemetery, and Parasuram Kund.

Pooja Bisht
PGT English
Kendriya Vidyalaya Moradabad

Folk Dance

Miss Nandini Sharma

FOLK DANCE

Folk dance, is a type of dance that is a vernacular, usually recreational, expression of a historical or contemporary culture. Arunachal Pradesh is a state of different tribes, cultures and traditions. The tribal dances here are simple and are performed to express joy during arrival of seasons, birth of a child, wedding and festivals. Folk dance is the common possession of a group of people or a particular locality. The identity of the originators is forgotten, but the style is preserved down the ages.Miss Nandini Sharma of Class VIIIB gave a glimpse of the moves and music inherent in the tribal dances of the area.

Nandini Sharma

Student

Kendriya Vidyalaya Moradabad

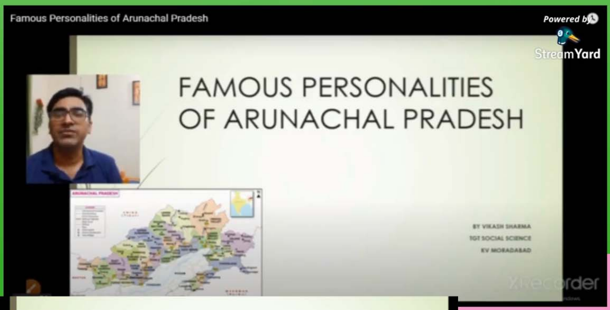

Famous Personalities

Mr. Vikash Sharma (TGT Social Science)

अरुणाचल प्रदेश के प्रसिद्ध व्यक्ति

अरुणाचल का अर्थ है, उगते सूर्य का पर्वत. ये नाम इस प्रदेश के लिए अत्यंत ही सारगर्भित है. अरुणाचल भारत के पूर्वी छोर पर स्थित है. भारत में सूर्योदय इसी छेत्र में सबसे पहले होता है. अत: यह वास्तव में अरुणाचल है. यद्यपि भारत का सबसे कम जनसँख्या घनत्व इस प्रदेश का है पर विभिन्न क्षेत्रों में यहाँ के निवासियों का विशिस्ट योगदान है. इन्ही विभूतियों में से कुछ का परिचय प्रस्तुत है.

तापी मारा एक पर्वतारोही हैं और अरुणाचल प्रदेश से एवरेस्ट को फतह करने वाले पहले व्यक्ति हैं।

अंशु जामसेनपा एक भारतीय पर्वतारोही और दुनिया की दूसरी महिला हैं, जिन्होंने एक सीज़न में दो बार माउंट एवरेस्ट की चोटी को फतह किया.

नबाम अतुम अरुणाचल प्रदेश के एक सामाजिक कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अरुणाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। सामाजिक कल्याण, वन संरक्षण और कई अन्य क्षेत्रों में भी इन्होने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

बिन्नी यंगा एक भारतीय सामाजिक कार्यकर्ता थी जो समाज के कमजोर वर्गों के कल्याण के लिए काम करती थी और बाल विवाह, जबरन विवाह और दहेज जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ अभियान चलाती थी । उन्हें 2012 में पद्म श्री के द्वारा भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया था।

ममांग दाई एक भारतीय कवि, उपन्यासकार और पत्रकार हैं जो अरुणाचल प्रदेश के ईटानगर से हैं। उन्हें उनके उपन्यास द ब्लैक हिल के लिए 2017 में साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

जोमे तायेंग एक भारतीय नौकरशाह और राजनीतिज्ञ थे, जो 1968 में अरुणाचल प्रदेश से भारतीय प्रशासनिक सेवा के पहले अधिकारी बने।

प्रेम खांडू थुंगन एक भारतीय राजनीतिज्ञ और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता हैं। वह भारत सरकार में पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री (शहरी विकास) रहे। वह 1978 में हुए पहले विधानसभा चुनावों के बाद जनता पार्टी के नेतृत्व वाली अरुणाचल प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री थे।

किरेन रिजिजू अरुणाचल प्रदेश के एक भारतीय वकील और राजनीतिज्ञ हैं। भारतीय जनता पार्टी के एक सदस्य, रिजिजू युवा मामलों और खेल मंत्रालय के वर्तमान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और भारत के अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय में राज्य मंत्री हैं।

तलोम रुक्बो अरुणाचल प्रदेश में स्थित एक पुनरुत्थानवादी धार्मिक आंदोलन, डोनी-पोलो के जनक थे, जो तानी (आदि) की आध्यात्मिकता के पुनर्निर्माण का प्रयास करते रहे।
उन्होंने भारत के पूर्वोत्तर में धर्मांतरण की आलोचना की।

प्रो तमो मिबांग, भारत में राजीव गांधी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति हैं। वह अरुणाचल प्रदेश के आदि जनजाति से हैं।

अरुणाचल ने भारत को कई रत्न दिए हैं. वस्तुत: यदि सभी के योगदान को बताया जाए तो एक लम्बी सूचि बन जाएगी. पर समय की सीमाओं का सम्मान करते हुए मैं इस परिचय को समाप्त करता हूँ और आशा करता हूँ की आप अरुणाचल को बेहतर जानने के लिए अपने स्तर पर कोशिश करेंगे. और यकीन मानिये, आप जितना ज्यादा इसे जानेंगे उतने ही आश्चर्यचकित रह जाएँगे.

विकाश शर्मा
प्र.स्ना.अध्यापक
केंद्रीय विद्यालय मुरादाबाद

Cuisine of Arunachal Pradesh

Master Yashasvi Dagar

CUISINE OF Arunachal Pradesh

The 'Land of Rising Sun', Arunachal Pradesh is situated in the farthermost north-eastern border of India. The influence of tribal communities and nearby Himalayan civilisations is quite evident in the local cuisine of this area. Arunachal Pradesh's platter varies across the regions and the tribal groups. The styles, methods of cooking, the ingredients used and elements of these tribal preparations are countless and hence offer one with a very diverse, vibrant and dynamic menu. The dishes use very less spice, and they mostly use flavours from herbs, organic productions and bamboo shoots. Chinese cuisine is also trendy and finds its distinct place in Arunachal Pradesh's kitchen.

Due to the high amount of variedness among local communities, the food preparation methods differ slightly from district to district.

Let us have a look at the richness of flavours in form of the popular, authentic and drool-worthy dishes of Arunachal Pradesh.

1. Rice: Two types of rice Dung Po, cooked using brass utensils, the rice is wrapped in leaves before serving. Other variety Kholam, cooked in a bamboo shoot tube filled with water.
2. Bamboo shoot: The famous and traditional Bamboo Shoot dish involves cooking of tender bamboo, marinated in baking soda and ground spices on a low flame.
3. Pika pila: a delicious dish of Apatani tribe cooked using bamboo shoot, pig fat, aromatic spices and a lot of spices. Served hot with rice.
4. Lukter: a flavourful combination of cooked dry meat and chilli flakes. This is a side dish that is served with traditional rice preparation of the state especially during New Year celebrations.
5. Pehak: a type of chutney that is made with fermented soya bean and chill.

It is best served with steamed rice and Lukter.

6. Apong: The local, light and traditional rice beer of the state. Made by drying, smoking, fermenting and filtering the rice concoction. It is drunk out of a bamboo shoot.
7. Chura sabzi: A traditional curry, relished with rice, is made with fermented cheese of yak's milk and the magical addition of flakes and a few pieces of local chilli that make it super spicy.
8. Momos: If you wish to taste the real authentic flavour of momos, travel the state and explore the street side varieties like vegetable momos, steamed momos, fried moms, fish momos, etc.
9. Thupka: a noodle soup dish that is made with boiled rice noodles, chicken or vegetables. It is a traditional dish of 'Monpa', a tribe of Arunachal Pradesh.
10. Po Cha: a butter tea prepared with yak milk, salt and butter mainly served with Koat Pitha or Lite. Traditionally not sweetened, but a bit of sugar can be added if you like!
11. Pasa: basically a soup that is made with fresh and raw fish. The addition of khumpatt leaves, ginger, garlic, makat, green chilli and minced meat paste makes it a sinful affair that locals relish during the winter season.
12. Koat Pitha: a famous dish prepared with flour, banana, jaggery and mustard oil. It is a sweet dish of Arunachal Pradesh.

The richness of flavours of the state is now widely visible and has made people from across the globe to drop down to explore the delicacies of Arunachal Pradesh. Thank you.

Yashasvi Dagar
Student
K V Moradabad

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

KENDRIYA VIDYALAYA LONGDING

Kendriya Vidyalayas of Arunachal Pradesh

Miss Nidhi Kumari (TGT Hindi)

IN SYNC WITH NATURE

KENDRIYA VIDYALAYAS OF ARUNACHAL PRADESH

The different Kendriya Vidyalayas in Arunachal Pradesh with their vivacious students and laborious staff contribute immensely towards realising the goals of holistic development of children through various curricular and co-curricular activities including those under Ek Bharat Shreshtha Bharat Programme. Some of the Vidyalayas of Arunachal Pradesh are Kendriya Vidyalaya Dirang Kendriya Vidyalaya Miao, Kendriya Vidyalaya Longding, Kendriya Vidyalaya Tuting,Kendriya Vidyalaya Ziro,Kendriya Vidyalaya Pasighat,Kendriya Vidyalaya Along,Kendriya Vidyalaya Tenga Valley,Kendriya Vidyalaya Tawang,Kendriya Vidyalaya Tezu,Kendriya Vidyalaya No.1 Naharlagun,Itanagar , Kendriya Vidyalaya Khonsa, Kendriya Vidyalaya Roing.

Nidhi Kumari

TGT Hindi

Kendriya Vidyalaya Moradabad

Community Song

Mr.Sandeep Bhatt (PRT Music)

अरुणाचल प्रदेश लोक गीत

एक भारत श्रेष्ठ भारत के अंतर्गत प्राप्त प्रदेश अरुणाचल प्रदेश के लोक गीत गायन के लिए "रिखम बो पादाम गो" गीत का चयन किया गया। गीत के लिए पहले संगीत शिक्षक द्वारा उसका track निर्माण के लिए धुन बना कर instrumental बच्चों को भेजा गया keyboard के लिए कक्षा XI A के देवमणि शर्मा को व तबले के लिए कक्षा X B के संगम नागपाल को record करने के लिए चुना और दोनों ने समय से बजा कर recording भेजी। बाक़ी instruments संगीत शिक्षक ने स्वयं बजाए। फिर गीत गाने के लिए बच्चों को ट्रैक भेजा जिसमें बच्चों ने बढ़ चढ़ कर प्रतिभाग किया और अपनी recordings भेजीं।

फिर फ़ाइनल recordings का चयन करके software के द्वारा process के उपरांत सभी recordings को एक video में समाहित किया गया जिसका परिणाम बेहद खूबसूरत प्रस्तुति के रूप में सामने आया और webinar में प्रस्तुत किया गया। गीत के प्रतिभागियों के नाम इस प्रकार हैं।

गायन —

- आस्था श्रीवास्तव — IX C
- कुंवरजीत सिंह — VIII A
- अभिनव आनंद — IV A
- समर चौधरी — IV A
- ईशा रावत — VI B

वादन —

- देवमणि शर्मा — XI A
- संगम नागपाल — X B

संदीप भट्ट
प्राथमिक शिक्षक (संगीत)
केन्द्रीय विद्यालय मुरादाबाद

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Festival & Dance

Mrs Radha Yadav (TGT Social Science)

FESTIVALS AND DANCES OF ARUNACHAL PRADESH

नमस्कार ,

त्यौहार शब्द सुनते ही मन में हर्ष और उल्लास जाग जाता है| मन अपने आप ही प्रफुल्लित हो उठता है | जी हाँ, आप सही समझ रहे है,अब हम अरुणाचल प्रदेश के त्योहारों और विभिन्न नृत्य शैलियों को देखने वाले है |

TWANG FESTIVAL

अरुणाचल की विविधता अपने आप में अनूठी है| यहाँ घूमने और संस्कृति से रूबरू होने का एक सुअवसर है ,तवांग उत्सव | तीन दिवसीय यह उत्सव एक धार्मिक अनुष्ठान सेबंग से प्रारंभ होता है | इसके साथ ही इस त्यौहार में खेल प्रतियोगिता ,हस्तकला प्रदर्सिनी और विभिन्न लोक न्नत्यो का भी आयोजन होता है |

तो आएये इसके बारे में थोडा और जानते है----------

DREE FESTIVAL

ड्री फेस्टिवल, आपातानी जनजाति का एक मुख्य कृषि उत्सव है | इस त्यौहार में आपातानी जनजाति विभिन्न प्रार्थनाओ और नृत्य के माध्यम से अपने देवताओ को अच्छी फसल के लिए कृतज्ञता अर्पित करते है |

तो आएये हम भी इस उत्सव में शामिल होते है ....

LOSAR FESTIVAL

लोसार उत्सव --- यह दो शब्दों लो और सार से मिलकर बना है ,लो का अर्थ है वर्ष और सार का अर्थ है नया ,इस प्रकार यह त्यौहार नवीन वर्ष के स्वागत में बड़े ही उत्साह एवम ख़ुशी के साथ मनाया जाता है |

प्रस्तुत है इस उत्सव की कुछ झलकियाँ ------

अरुणाचल प्रदेश के लोकनृत्य यहान्न के आदिवासी लोगो के जीवन में आनंद और उत्साह का प्रमुख माध्यम है | अधिकांश लोक न्नत्य पारम्परिक वेश भूषा ,सजे हुए भाले,बहुरंगी मुखातो और गहनों से सजे हुए होते है |

अभी हम सभी मिजी जनजाति की प्रस्तुति देखेंगे ----------

AJI LAHMU DANCE

आजी लम्हू नृत्य मोनपा जनजाति द्वारा किया जाने वाला सबसे प्रमुख नृत्य है |

वास्तव में यह हिन्दू धर्म ग्रन्थ रामायण का तिब्बती रूप है |

तो आये त्यौहार और नृत्य की इस अंतिम प्रस्तुति का आनंद उठाते है |

धन्यवाद

राधा यादव
प्रशिक्षिक स्नातक शिक्षिका(सामाजिक विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय मुरादाबाद

Art Galore

Mrs Arti Sharma (TGT A.E)

Art Galore

The people, lifestyle, festivals, dances, temples, cuisine etc. of Arunachal Pradesh found a vivid depiction in the works of the budding artists of Kendriya Vidyalaya Moradabad under the guidance of their Art Teacher Mrs. Arti Sharma. Students from Class III-XII presented a mix of colours and creativity through their portraits and landscapes.

Arti Sharma
TGT (A.E)
Kendriya Vidyalaya Moradabad

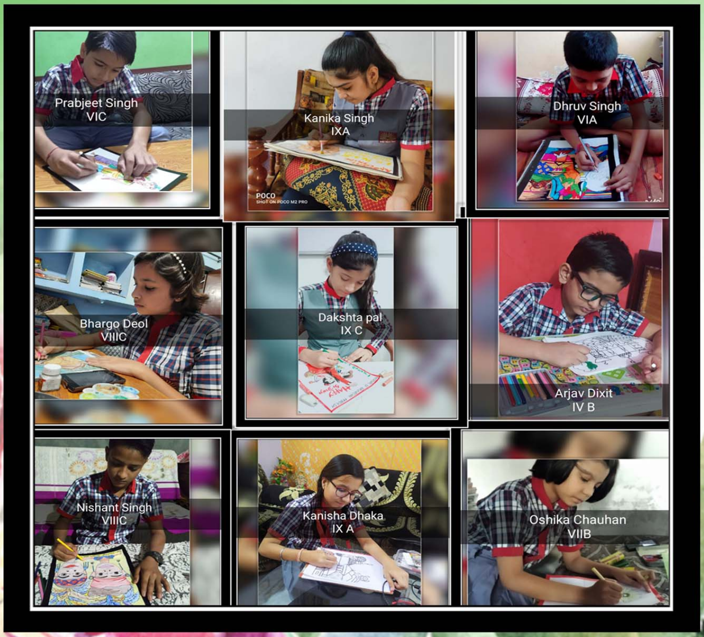

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति

Shri C.S. Azad

Deputy Commissioner
KVS RO Agra

संदेश

केन्द्रीय विद्यालय का नाम लेते ही,एक 'मिनी भारत'की छवि हमारे सामने उभर कर आ जाती है।अलग-अलग संस्कृति से आए विद्यार्थी व शिक्षकगण, भारत की अनेकता में एकता का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। भारत विविधताओं वाला देश है।ऐसा देश जहाँ कोस- कोस पर बोली बदल जाती है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन "एक भारत श्रेष्ठ भारत" के माध्यम से बच्चों को इन विविधताओ को जानने और समझने का अवसर प्रदान करता है।

पिछले दो वर्षो से के.वि.संगठन आगरा संभाग को अरुणांचल प्रदेश, सहचर(साथी) प्रदेश के रूप में दिया गया है। विद्यार्थियों को अरुणांचल प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों के बारे में जानकारी एकत्रित करनी चाहिए, वहाँ के निवासियों के जीवन व संस्कृति के बारे में जानना चाहिये।

वेबिनार में विद्यार्थियों ने इतनी मनमोहक प्रस्तुतियां पेश की, हमें ऐसा लगा कि, जैसे हम अरुणांचल प्रदेश में ही भ्रमण कर रहे हैं। शिक्षकों द्वारा अरुणांचल प्रदेश के बारे में दी गई जानकारी विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी रही होगी।

इस सफल वेबिनार के आयोजन एवं निर्देशन के लिए सह आयुक्त श्रीमती इंदिरा मुद्गल एवं डॉ एम एल मिश्रा केंद्रीय विद्यालय आगरा संभाग को बहुत बहुत बधाई।

इस सुन्दर व सफल वेबिनार की प्रस्तुति के लिए प्राचार्य केन्द्रीय विद्यालय मुरादाबाद व समस्त टीम को बधाई।

चन्द्रशेखर आजाद
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
आगरा संभाग

Thank You

Mrs Pooja Bisht (PGT English) Miss Nidhi Kumari (TGT Hindi)

Comperes

Newsletter Designed By : Mrs Arti Sharma TGT (A.E) K V Moradabad

एक भारत श्रेष्ठ भारत

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग की प्रस्तुति